



This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit.
The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website
<https://kksu.co.in/>

Digitization was executed by NMM

<https://www.namami.gov.in/>

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi
Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade
Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi
<https://egangotri.wordpress.com/>

पारवल अंक

m-2555

शिर्षक	ग्रंथकार	विषय	विस्तार (पूर्ण/ अपूर्ण)	टिकाकार	आकार	पृष्ठे	लिपी	सामग्री	Lines per page	Letters per line	Condition & age (शके/विक्रम संवत्)	Additional Particulars / Remark
महाभारत भाष्य	-	महाभारत	पूर्ण	-	3/5	8	मंथन कागद	06	18			

श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीसरस्वत्ये नमः ॐ अ
स्य श्री पंचक्षोकी महासरस्वतिस्त्वयराज
स्य बृहस्पतिऋषिः अनुष्टुप छंदः॥ श्रीम
हासरस्वतिदेवताः भूमचतुर्दशविद्या
मार्गार्थी श्रीसरस्वती प्रीत्यर्थं नवे विनि
येतामः॥ बृहस्पतिस्तुवाच॥ सरस्वतिं न

मस्या मिचे लनां द्रि संस्सी तं ॥ कंठस्थं
॥ पप्रयो नी-हीः ही-हीकार प्रियां सदा ॥ १९ ॥
मतिदां वरदं येव सवर्का भ कल प्रदां ॥
ऐ-हे प्रियां सदा हृद्यं कुमति ध्वं स कं रि कां
॥ स्व प्रकाशं निरा लंबा भुजान ली भि वि
पदां ॥ भोक्ष प्रदां नित्यं ॥ सुभगां हो भन

प्रियां ॥ कद्रो पवित्रां कुंडलिनीं । सुकुचैश्चां
भनोहरां ॥ ४ ॥ आदित्यमंडले शालीनां भ
षामि जनप्रियां जाको जदीयां : भक्त
जादय विनाशिनि ॥ इत्येतत्सु सुखादे
विवागि कोन महात्मना ॥ आत्मानंद
स्थितासः ॥ शारदिंदु सभ प्रभा ॥ ५ ॥

श्रीसरस्वत्युवाचः वरंवृणीष्यमद्रं ते पत्न

॥ ॥ भनसि वर्ततेः ॥ ॥ बृहस्पतिस्तुवाचः ॥ ॥ अ

संन्नायदि भेदे देवी परं ज्ञानं प्रयत्नमे ॥ ॥ ॥

श्रीसरस्वत्येवाचः ॥ ॥ ईदं तौ निर्मलं ज्ञानं कु

भलीद्वं सकारकं ॥ ॥ स्तोत्रेणानेन ये भक्त्य

भास्तु वं लिखदाननराः ॥ ॥ ॥ तत्रैते परम

भ तिनु तिमि नमिभिः कीर्तनीये नित्ये
नीत्ये नित्ये भु निगण नमिते नूतने वै
पुराणेः पुण्ये पुण्य प्रवाहे हरि हर नभिते वर्ण
लले सुवर्णे भाल भामिर्दलले भालि भालि
भालिदे आधव श्री निवादे ॥ ४ ॥ ह्रीं ह्रीं क्लीं
श्री स्वरूपे द ह द ह दु वि लं पु स्त कं व्यग्र ह स्त

॥२॥

संतुष्टाकारचित्तस्मीलप्रखसुभगेष्टंभिणि
स्त्वंभविद्ये॥भोहेभुग्धप्रबोद्येभभक्रुक्रु
मत्नीध्यांतविध्यंस्तभीमेगीगीविभितरति
त्वंकविधृत्तरसिनेसिद्धिदेसिद्धिसाध्ये॥६॥
सौसौसौहाकीविजेकमलभवभुरवांभो

न भुलस्वरूपे रूपे रूपया प्रकाशे सकलं गु
णभये निर्गुणे निर्विकल्पे ॥ न स्मृते नैव
स्मृत्येभ्य विदित विभावे ज्ञात्य विज्ञान
तत्त्वे विश्वे विश्वां त्वराते सकलं गुणयु
ते निष्कले नित्ये शुद्धे ॥ ६ ॥ स्तौ मित्यां

१।४॥

त्याचं चंदेभभरवल्लुरसनां भाकदा चित
जेयाभाभे बुद्धि निरिद्धा भवतु भभभनो या
नुभादे विवाचं ॥ भाभेदुखं कदा चि क्वचि
दपि सभये पुस्तके नाकु त्वं शास्त्रे वादे
कवित्वे स्रसदतु भभधी मास्त्रुं ठाकदा
दी ॥ ५ ॥ इत्येतै श्लोक सुख्ये भ निदिन

६

मुचसी स्तोति यो भक्ती न भ्रातृया वाचस्प
ते रष्य विदित विभवो वा क्यदु मुष्टि वं कः ॥
न स्यादिष्टार्थेनाभ्री सुतभी व स न तं वा
ति तं चा सु देवि सौ भ्रातृ न स्य लोकं प्रसर
तिक वित्ता विधु भस्त्रं मया ति ॥ ८ ॥ निर्वि
ष्टं तस्य विद्या न भवति स त तं चा मृतं

॥ ७ ॥

धनो धः कि । ली स्त्रो लो वय मध्ये विव रन निव
दने शारदा तस्य सा क्षा त ॥ दी धरि यु ले कि
पुत्र्यः सक क गु ण नि धीः सं त त र ज्ञ मा न्ये
वा ग्देव्याः सं प्र सा दा भी ज ग ति वि ज यी
जा ये त स न स भ त्सु ॥ ८ ॥ ब्र भू चा री व्र ती
मो नी भ यो द श्यं नि शा भ यः सार स्य लो ज

७

नः पासस्थादि ह्यर्थलाभवान् ॥१०॥ दक्ष
द्वयेच यो भक्त्या न यो दस्यैक विहातिः अवि
धिन्नं पठेद्दिदानध्यात्वा देवि सरस्वतीं ॥११॥
भक्त्यापि निभुक्तिः सुभगो लोक विश्रुतः
पादित्वं कलभा गोलिलोके रम्भी नाम संज्ञा
यः ॥१२॥ इति सरस्वति स्तोत्रं संपूर्णं श्री

॥६॥ श्रीगुरुदेवमस्तु ॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥ ५॥

[OrderDescription]
,CREATED=08.01.20 14:08
,TRANSFERRED=2020/01/08 at 14:11:30
,PAGES=13
,TYPE=STD
,NAME=S0002495
,Book Name=M-2555-SARSAWATI STROT
,ORDER_TEXT=
,[PAGELIST]
,FILE1=00000001.TIF
,FILE2=00000002.TIF
,FILE3=00000003.TIF
,FILE4=00000004.TIF
,FILE5=00000005.TIF
,FILE6=00000006.TIF
,FILE7=00000007.TIF
,FILE8=00000008.TIF

FILE9=00000009.TIF
,FILE10=00000010.TIF
,FILE11=00000011.TIF
,FILE12=00000012.TIF
,FILE13=00000013.TIF
,